गुरमत संगीत में वाद्यों का योगदान

करनजीत सिंह*

'वाद्य' शब्द भारतीय संगीत में वाद्य यंत्रों के लिए प्रयोग किया जाता है। लेकिन संगीत शास्त्रों में यह शब्द विभिन्न अर्थों से प्रयोग किया गया है। वैदिक समय से ही हमें वाद्यों की चर्चा सुनने में मिलती हैं। भारतीय संस्कृति के साथ वाद्यों का सम्बन्ध बहुत गहरा है। देवी देवताओं का सम्बन्ध भी वाद्यों के साथ जोड़ा गया है। जैसे भगवान् शिव का डमरू, सरस्वती देवी की वीणा आदि इस तरह से धर्म के साथ वाद्यों को जोड़ा जाता है। संगीत रत्नाकर अनुसार चार प्रकार के वाद्यों से गीत उत्पन्न तथा उपरंजित होते हैं और मापे जाते हैं। वाद्यों के दस गुण माने गए हैं -रिकत, विरक्त, मधुर, सम, शुद्ध, कल, घन, सुभर, सफूटपरहार और विघुसट आदि।[1]

गुरमत संगीत में भारतीय संस्कृति का भी अनुसरण किया गया। गुरमत संगीत में वाद्य संगत के रूप में प्रयोग किये गए, स्वतंत्र वादन का गुरमत संगीत में कोई स्थान नहीं है। गुरमत संगीत की शास्त्रीय, अर्ध शास्त्रीय आदि सभी गायन शैलियों में वाद्यों की संगत का चलन है। सिख गुरुओं द्वारा प्राचीन समय से ही वाद्यों की मदद से मनुष्य की आवाज़ का अनुसरण किया गया। गुरमत संगीत का उदेशय संगीत कला प्रधान ना होकर अध्यात्मिकता की और ज्यादा रहा। इसीलिए गुरमत संगीत में वाद्यों का स्वतंत्र वादन प्रचलित न हो पाया। गुरमत संगीत की प्रस्तुति के लिए उन वाद्यों का चयन किया गया है जो गुरबाणी के भाव को और ज्यादा स्पष्ट करते हैं। गुरबाणी संगीत में वाद्यों के लिए पंक्तियाँ मिलती हैं-

चार भांत के वाद्य बखानो तत अर सुखर मोद मन मानो
सुन आणुध और घर जान इन की बिध अब कहत बखान

हिंदुस्तानी संगीत में वाद्यों को चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है। तत वाद्य, अवनध वाद्य, घन वाद्य और सुषिर वाद्य।

तत वाद्य- तत वाद्यों को तंत्री वाद्य भी कहा जाता है। तत वाद्यों में तारों का प्रयोग किया जाता है। इस वाद्य श्रेणी के अंतर्गत वीणा, सितार, रबाब, सारंदा, ताउस, दिलरूबा, तानपूरा आदि वाद्य आते हैं। इस श्रेणी के वाद्यों को मिजराब, ज्वा, गज् और उंगलिओं के साथ बजाया जाता है।

अवनध वाद्य- इन वाद्यों को वितत वाद्य भी कहा जाता है। इन वाद्यों के ऊपर चमड़ा चढ़ाया जाता है। इन वाद्यों को दोनों हाथों से बजाया जाता है। इस श्रेणी के अंतर्गत मृदंग, पखावज, तबला, ढोलक आदि वाद्य आते हैं।

सुषिर वाद्य- वह वाद्य जिन का वादन वायु के प्रयोग के साथ किया जाता है, उनको सुषिर वाद्य कहा जाता है। इन वाद्यों के अंतर्गत बांसुरी, शहनाई, बीन, हारमोनियम आदि वाद्य आते हैं।

---

1 पं. शारंगदेव, संगीत रत्नाकर, छठा वाद्य ध्याए, श्लोक 3

*शोधाार्थी, पीएच.डी.,संगीत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007, ई-मेल karanrubal@yahoo.com